कावेरी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय

कर्नाटक, बेंगलूरु – 560001

अंक : 25

कावेरी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय

कर्नाटक, बेंगलूरु–560001

कावेरी
हिंदी पत्रिका-2020
अंक : पच्चीस

प्रकाशनः
कावेरी हिंदी गृह पत्रिका

प्रकाशकः
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय कर्नाटक, बेंगलूरु-560001

अंकः
पच्चीसवाँ (25)

उद्देश्यः
राजभाषा का संवर्धन एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना।

मूल्यः
राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री आर. नरेश
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

संरक्षक

डॉ. प्रियांका एल. नायक
उप महालेखाकार (प्रशासन)

यशोदा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)

शिवप्रिया. बी.
वरिष्ठ लेखाधिकारी (प्रशासन)

संपादक

उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी

सहयोगी प्रतिनिधि

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संदीप
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अभिषेक कुमार
हिंदी टंकक

एवं
सभी रचनाकार

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिम् कुरु ॥

भारतीयों में यह मान्यता है कि यदि पवित्र तीर्थस्थलों के दर्शन न कर सकें तो, दृढ़ विश्वास के साथ उन तीर्थस्थलों का स्मरण करते हुए स्नान किया जाए तो वही सुफल प्राप्त होता है जो उनके प्रत्यक्ष दर्शन करने से प्राप्त होता है। इन्हीं पवित्र तीर्थों का स्मरण है उपरोक्त स्तुति।

- **टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।**
- **मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।**
- **शब्दों में अटकिए नहीं।**
- **अशुद्धियों से घबराइए नहीं।**
- **अभ्यास अविलम्ब आरंभ कीजिए।**

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका **कावेरी** के 25वें अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन की दिशा में कावेरी पत्रिका हमारे कार्यालय का एक सामूहिक प्रयास है। राजभाषा हिंदी में सरकारी काम-काज करना हमारा संवैधानिक दायित्व ही नहीं बल्कि हमारा कर्तव्य भी है। हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब भी है। हिंदी आज विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना चुकी है। हिंदी आज एक सफल संपर्क भाषा बन चुकी है। विश्व के अनेक देश आज हिंदी को प्रेम के साथ अपना रहें हैं।

कावेरी विगत 25 वर्षों से इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही है पत्रिका की यह यात्रा कार्यालय के पदाधिकारियों के हिंदी के प्रति प्रेम व लगाव को दर्शाता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह यात्रा आगे भी जारी रहेगी। कार्यालय के पदाधिकारी पत्रिका के प्रति अपना स्नेह बनाए रखेंगे तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से अपना योगदान करते रहेंगे।

कावेरी के नूतन अंक को सभी को समर्पित करते हुए आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

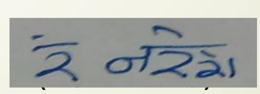

(आर. नरेश)

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह)

अभिनंदन

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका '**कावेरी**' का यह 25वाँ अंक है। नये कलेवर में नूतन अंक का अभिनंदन है। हिंदी संघ की राजभाषा है और हिंदी में कार्य करना हमारा कर्तव्य है। संवैधानिक कर्तव्यों का पालन करना हम सभी का दायित्व है। कावेरी का हर एक नया अंक हमें इसी कर्तव्यनिष्ठा का बोध कराता है। यह सर्वविदित है कि हिंदी आज एक नये मुकाम पर पहुंच चुकी है। हमारा कार्यालय हिंदी को कार्यालयीन काम-काज में बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों को सदैव प्रेरित करता रहा है। हिंदी कार्यशालाएं हो या फिर हिंदी के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यालय के कर्मचारी सभी में बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे हैं।

कावेरी के इस अंक में शामिल सभी रचनाएं प्रशंसनीय एवं संग्रहणीय हैं। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि कार्यालय के पदाधिकारी भविष्य में भी **कावेरी** के लिए अपना योगदान करते रहेंगे।

मैं सभी रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ तथा संपादक मण्डल को सफल संपादन हेतु बधाई देती हूँ। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

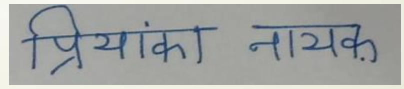

(डॉ. प्रियांका एल. नायक)

उप महालेखाकार (प्रशासन)

शुभकामना

हिंदी गृह पत्रिका '**कावेरी**' के 25वें अंक को पाठकों को अर्पित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारे कार्यालय द्वारा **कावेरी** का प्रकाशन राजभाषा हिंदी को बढावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका रचनात्मक भूमिका निभा रही है। **कावेरी** पत्रिका के माध्यम से हमारे विचारों का आदान-प्रदान तो होता ही है साथ ही कार्यालय में हिंदी को बढावा देने की दिशा में आयोजित होने वाली अन्य गतिविधियों की झलक भी मिलती है। **कावेरी** के सभी रचनाकारों के प्रयास प्रशंसनीय हैं। मैं सभी रचनाकरों को हार्दिक बधाई देती हूँ। संपादक मण्डल को पत्रिका के प्रथम ई-अंक के सफल संपादन हेतु बहुत-बहुत बधाई।

कावेरी के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

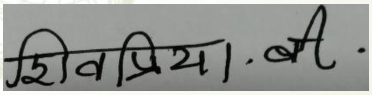

(शिवप्रिया बी.)
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.)

सम्पादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

नये कलेवर में **कावेरी** का नूतन अंक आप सभी को सादर समर्पित है। कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' हमारे कार्यालय के कार्मिकों के साहित्यिक विचारों का समागम है, हिंदी के प्रति उनका प्रेम है, लगाव है, स्नेह है। भाषा सिर्फ विचारों का आदान-प्रदान मात्र नहीं है बल्कि हमारी विरासत एवं परंपराओं को आने वाली पीढ़ियों तक प्रवाहित करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा विचारों को जीवंत बनाती है। सृजन एक श्रेष्ठ कार्य है। किसी भी व्यक्ति के लिए अपने विचारों को एक रचना के रूप में परिणित करना एक बड़ा कार्य है। कावेरी में समाहित सभी रचनाकारों के विचार अनमोल एवं मौलिक हैं।

प्रस्तुत अंक **कावेरी** का पच्चीसवां अंक रजत जयंती अंक है और इसकी विशेषता यह है कि इसमें विगत कई अंकों की कुछ प्रमुख रचनाओं को समाहित किया गया है। इन रचनाओं रूपी झरोखों के माध्यम से हमें कावेरी के इतिहास का अवलोकन करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा। कोविड 19 महामारी के प्रभाव के परिणाम स्वरूप इस वर्ष कावेरी का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में किया जा रहा है। यह कावेरी का प्रथम ई-अंक है। आशा है यह अंक सभी को पसंद आएगा।

रचनाकारों को उनके योगदान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। यह9अंक आपको कैसा लगा कृपया अवगत कराएं। पत्रिका के संबंध में आपके विचारों का इंतजार रहेगा।

इसी शुभकामना के साथ।

(उदय प्रताप सिंह)

हिंदी अधिकारी

आपकी प्रतिक्रियाएँ

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका कावेरी के चौबीसवें अंक की एक प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेषकर श्रीमती शिवप्रिया बी. (चंद्रयान 2 तथा याद बहुत आता है मुझे), श्रीमती वी.सुधा (डिजिटल इंडिया) श्री सुधा जी. कुमार (माँ रो रही हैं), श्रीमती शिखा गोयंका (उम्र के साठ साल), श्री संदीप (तब वह फौजी कहलाता है), श्रीमती विजयलक्ष्मी मुरलीधरन (स्मृतियाँ सहेजे रखना मेरे साथी एवं कौन सी मिट्टी है मेरी) एवं श्री उदय प्रताप सिंह (मेघ बनूँ की रचनाएँ अत्यंत ही सराहनीय है।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(ले.व ह.) पश्चिम बंगाल

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं. म.ले../ले.व.हक.)/हिं.प./कावेरी प्रे./123-193 दिनांक-01.10.2019 के साथ हिंदी पत्रिका “कावेरी” के 24वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई,सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर दिया गया चित्र मनमोहक है।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में पृष्ठों की गुणवत्ता तथा मुद्रित छाया चित्र प्रशंसा के योग्य है।

हिंदी भाषा की प्रगति हेतु कार्यालयीन पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु आप सभी को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

ले.प. अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
जम्मू व कश्मीर और लद्दाख, श्रीनगर

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका “कावेरी” के 24वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का संपादन सराहनीय है।

पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर योग का उपयोग, संकलित, सम्मान और अपमान आपही के हाथ में हैं, दम घुटता है दिल्ली में आदि रचनाएँ बड़ी प्रेरणादायक है। पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसा कामना है।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) म.प्र.

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका “कावेरी” के 24वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई,सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री दलवीर सिंह की रचना देश की शान- सेना को सलाम, सुश्री विजयलक्ष्मी मुरलीधरन की रचना देश स्मृतियाँ सहेदे रखना मेरे साथी तथा श्री सुधांशु द्विवेदी की रचना हिमा दास आदि उल्लेखनीय है।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	ठिठक रहे हैं पाँव	उदय प्रताप सिंह	11
2	लट्टमार होली	उदय प्रताप सिंह	12
3	चुटकुले	एम.एस. सुकन्या	13
4	अच्छाई आती रहती है	साहब यादव	14
5	जुगाड़ 'एक सर्वेक्षण'	राहुल शर्मा	15
6	मेरा प्यारा हरियाणा	संदीप	16-17
7	एक सैनिक की इच्छा	दलबीर सिंह	18
8	चुटकुले	ज्योति	19
9	उपकार	राजेश साह	20-21
10	डिजिटल इंडिया	सुमा जी कुमार	22-23
11	डिजिटल इंडिया	शिखा गोयंका	24-26

कावेरी के पूर्व अंकों से

12	मेरी छोटी सी रसोई से	रूप सी.आर	27
13	उलझन-सुलझन	एम.एस.पद्मा	28
14	राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान	एन.जी.गायत्री	39-30
15	दायित्व	चित्रा रमेश	31-32
16	दीवान सर्वश्री विश्वेश्वरय्या	सण्णि फ्रांसिस पी.	33-34
17	जीवन की चाबी	वी.पी.मागी।	35-36
18	संबंधों का तात्पर्य	एम. हेमावती	37
19	फलों से निखारें शारीरिक सुंदरता	पद्मलता एम.एस	38
20	स्वास्थ्य एलं बस यात्रा	एम.एस.पद्मा	39-40
21	स्वामी विवेकानंद	सी.वी.भ्रमरा	41-42
22	संक्षिप्त द्विभाषी वाक्यांश	संकलन	43
23	जन-मन की अभिलाषा	उदय प्रताप सिंह	44
24	बेटे भी घर छोड़ जाते हैं	संकलन संदीप	45
25	बोन्साई	सुमा जी कुमार	46
26	भारत में आपदा प्रबंधन	सुमित कुमार	47-48
27	पूर्णविराम का चमत्कार	एस सुभद्रा	49

ठिठक रहे हैं पाँव

-उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी

"सीरत बदल रही गाँवों की,
ठिठक रहे हैं पाँव...."
"सबको नेता बनना है,
सबके अपने दाँव...."

"सामाजिक भाईचारे की,
बैठक अब चौपाल नहीं...."
"कटुता के अड्डे जमते हैं,
चलते सीधी चाल नहीं...."

"घास निराई बंद हो गई
उसके लिए दवाएं हैं
घुटन भरा माहौल बना,
ज़हरीली हुई फ़िज़ाएं हैं...."

"सामूहिक नशा कराने में,
गाँव बने हैं नंबर एक...."
"युवा भी डुबकी लगा रहे हैं,
मुफ़्त की गंगा बहती देख...."

"कोई धुत नशे में चूर,
कोई फिरता बना गफ़ूर...."
"पास-पास रहते कहने को,
हृदय में रहते मीलों दूर...."

"भटक रही हैं नई पीढ़ियाँ,
उनको राह दिखाए कौन...."
"मदमस्त देखते रहते मुखिया,
वोट की ख़ातिर बैठे मौन....."

लट्ठमार होली

(संकलन)

-उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी

हमारे देश में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। इन त्योहारों में से एक प्रमुख त्योहार है होली। देश के अलग-अलग भागों में अलग-अलग तरह से होली मनाई जाती है। होली एक अनूठा त्योहार है। बरसाना की लट्ठमार होली भारत के सबसे रंगीन पर्व होली मनाने के अपने अनूठे तरीके के लिए विश्वप्रसिद्ध है। बरसाने की लट्ठमार होली फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है। इस दिन नंदगाँव के ग्वाल बाल होली खेलने के लिए राधा रानी के गाँव बरसाने जाते हैं और विभिन्न मंदिरों में पूजा अर्चना के पश्चात नंदगांव के पुरुष होली खेलने बरसाना गांव में आते हैं और बरसाना गांव के लोग नंदगांव में जाते हैं। इन पुरुषों को होरियारे कहा जाता है। बरसाना की लट्ठमार होली के बाद अगले दिन यानी फाल्गुन शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन बरसाना के हुरियारे नंदगांव की हुरियारिनों से होली खेलने उनके यहां पहुंचते हैं। तब नंदभवन में होली की खूब धूम मचती है।

दरअसल बरसाना की लट्ठमार होली भगवान कृष्ण के काल में उनके द्वारा की जाने वाली लीलाओं की पुनरावृत्ति जैसी है। माना जाता है कि कृष्ण अपने सखाओं के साथ इसी प्रकार कमर में फेंटा बांधकर राधारानी तथा उनकी सखियों से होली खेलने पहुंच जाते थे तथा उनके साथ ठिठोली करते थे जिस पर राधारानी तथा उनकी सखियां ग्वाल बालों पर डंडे बरसाया करती थीं। ऐसे में लाठी-डंडों की मार से बचने के लिए ग्वाल वृंद भी लाठी या ढ़ालों का प्रयोग किया करते थे जो धीरे-धीरे होली की परंपरा बन गयी। उसी का परिणाम है कि आज भी इस परंपरा का निर्वहन उसी रूप में किया जाता है।

जब नाचते झूमते लोग गांव में पहुंचते हैं तो औरतें हाथ में ली हुई लाठियों से उन्हें पीटना शुरू कर देती हैं और पुरुष खुद को बचाते भागते हैं। लेकिन खास बात यह है कि यह सब मारना पीटना हँसी खुशी के वातावरण में होता है। औरतें अपने गांवों के पुरुषों पर लाठियां नहीं बरसातीं. बाकी आसपास खड़े लोग बीच-बीच में रंग बरसाते हुए दिखते हैं। इस होली को देखने के लिए बड़ी संख्या में देश-विदेश से लोग बरसाना आते हैं। यह लट्ठमार होली आज भी बरसाना की औरतों, लड़कियों और नंदगांव के आदमियों, लड़कों के बीच खेली जाती है।

चुटकुले

एम.एस.सुकन्या
वरिष्ठ लेखाकार

1. टीचर– छोटी मधुमक्खी तुम्हें क्या देती है

बच्चा- शहद

टीचर- पतली बकरी

बच्चा- दूध

टीचर- और मोटी भैंस

बच्चा- होमवर्क

टीचर- दे थप्प़ड़ दे थप्पड़।

2. अगरबत्ती दो प्रकार की होती है

एक भगवान के लिए, एक मच्छरों के लिए

तकलीफ ये है कि भगवान आते नहीं और मच्छर जाते नहीं।

3. बड़े बुजुर्ग कह गए है कि सोच हमेशा ऊंची होनी चाहिए,

इसीलिए मैं हमेशा छत पर जाकर सोचता हूं।

4. टीचरः जी.एस.टी. क्या है

बच्चाः गुडनाईट, स्वीट ड्रीम्स , टेक केयर।

5. एक ही गीत में पूरी जिंदगी का सफर देखिए

नयनों में सपना (उम्र 5 से 15 तक)

सपनों में सजनी (उम्र 15 से 25 तक)

सजनी पे दिल आ गया (उम्र 25 से 35 तक)

क्यों सजनी पे दिल आगया (35 से 40 तक)

बाकी पूरी उम्र ता थैय्या ता थैय्या ओ.....।

अच्छाई आती रहती है

साहब यादव
डी.ई.ओ.

ब्रिटेन के स्काटलैंड में फ्लेमिंग नाम का एक गरीब किसान रहता था । एक दिन वह अपने खेत पर काम कर रहा था । अचानक पास से किसी के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी। किसान ने अपना साजो सामान व औजार एक तरफ फेंका और तेजी से आवाज की तरफ लपका। आवाज की दिशा में जाने पर उसने देखा कि एक लड़का कमर तक कीचड़ में डूबा हुआ था और निकलने की कोशिश कर रहा था। किसान ने अपनी जान हथेली पर रखकर उस बच्चे को बचा लिया ।

अगले दिन किसान की झोंपड़ी के सामने एक शानदार गाड़ी से एक व्यक्ति उतरा। उसने बताया कि मैं उस बच्चे का पिता हू जिसकी जान आपने बचाई थी। मैं आपके इस एहसान का बदला चुकाना चाहता हूं फ्लेमिंग ने यह कहते हुए पेशकश ठुकरा दी कि किसी को बचाना मानवता है और मानता का कोई मोल नहीं होता। उस अमीर सज्जन की नजर उसके लड़के पर गई और कहा ठीक है मैं आपके बेटे की शिक्षा का खर्च वहन करुंगा।

बच्चे के भविष्य के लिए फ्लेमिंग सहमत हो गया। अब फ्लेमिंग के बेटे को अच्छे स्कूल में पढ़ने का मौका मिला और उसने लंदन के प्रतिष्ठित मेडिकल स्कूल से से स्नातक डिग्री हासिल की। किसान का यही बेटा पेनिसिलिन का आविष्कारक महान वैज्ञानिक सर अलेक्जेंडर फ्लेमिंग के नाम से विख्यात हुआ ।

कुछ वर्षों बाद उस अमीर के बेटे को निमोनिया हो गया और उसकी जान पेनिसिलिन के इंजेक्शन से ही बची। उस अमीर व्यक्ति के बेटे का नाम था- विंस्टन चर्चिल, जो दो बार ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे। इसीलिए ही कहते है कि व्यक्ति को हमेशा अच्छे कार्य ही करते रहना चाहिए क्योंकि आपका किया हुआ अच्छा या बुरा कार्य अंत में आपके पास ही वापस आता रहता है ।

यकीन मानिए मानवता की दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम आपकी स्वयं की चितांओं का कम करने में मील का पत्थर साबित होगा।

जुगाड़ 'एक सर्वेक्षण'

राहुल शर्मा
एम.टी.एस.

'जुगाड़' शब्द सुनने में बड़ा ही अटपटा लगता है लेकिन इसका भविष्य बड़ा ही सुनहरा है। 'जुगाड़' शब्द का आशय एक ऐसी युक्ति जो किसी कठिन कार्य को सरल कर दे और समय भी बचाये। पहले मिस्त्री, किसान, मजदूर आदि जुगाड़ के सहारे विपरीत परिस्थितियों में भी काम न करने वाली मशीनों एवं उपकरणों को कार्य के लायक बना लेते थे और आज भी समय-समय पर जुगाड़ का सहारा लेते हैं।

मजे की बात तो यह है कि जुगाड़ के सहारे कुछ लोगों ने डीज़ल इंजन के प्रयोग से एक गाड़ी का आविष्कार किया जिसका प्रयोग सवारियों ढोने एवं कृषि के सामान को ढोने की लिए किया जाता है और उस गाड़ी का नाम जुगाड़गाड़ी रखा गया। कई सकारात्मक पहलुओं के बावजूद आज मनुष्य पल-पल में जुगाड़ का सहारा ले रहा है और जुगाड़ इतना प्रचलित हो गया है कि ऊपर से नीचे तक हर क्षेत्र में इसका सहारा लेना मनुष्य की प्रवृति होती जा रही है। लगभग हर क्षेत्र में जुगाड़ ही जुगाड़ है।

यहां तक कि राजनैतिक लोग उच्च पद पर आसीन होने के लिए, अपनी सीट बरकरार रखने के लिए और वोटबैंक को अपने पक्ष में करने के लिए हर तरह के जुगाड़ का सहारा ले रहे हैं । इसी प्रकार बड़े से बड़े अधिकारी मनचाही तैनाती पाने के लिए जुगाड़ का सहारा ले रहे हैं। छोटी से छोटी नौकरी पाने के लिए व्यक्ति जुगाड़ की तलाश में संपर्क करता दिखाई देता है। ऐसे में जुगाड़ महोदय जिसका साथ दे देते हैं वह तीरंदाज हो जाता है। देश का भविष्य कहे जाने वाले विद्यार्थी भी एडमिशन से लेकर डिग्री हासिल करने तक जुगाड़ लगाने से नहीं चूकते हैं। इतना ही नहीं प्रतिस्पर्धा के इस युग में हर क्षेत्र में औद्योगिक, व्यापारिक, शिक्षा, चिकित्सा या अन्य कई क्षेत्रों में भी जुगाड़ अपने पैर पसारता जा रहा है ।

कई बार ऐसा देखा जाता है कि ईमानदार एवं योग्य अभ्यर्थी जुगाड़ न होने के कारण इधर-उधर भटकते रहते हैं। जुगाड़ मनुष्य के मस्तिष्क में इतना स्थान बनाता जा रहा है कि अब तो मनुष्य ईश्वर के दर्शन करने तक में जुगाड़ लगाने से भी नहीं चूकते हैं।

अतः आप लोग जुगाड़ महोदय को छोटा न समझे। इसका स्वरूप दिन-प्रतिदिन विशाल होता जा रहा है लेकिन डर यह है कि भारत जैसा विशाल देश जुगाडू लोगों का देश न कहा जाने लगे ।

मेरा प्यारा हरियाणा

संदीप
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारत एक विशाल देश है। इतने विशाल देश में विभिन्नताओँ का होना एक सामान्य सी बात है। हमारे भारत वर्ष में 28 राज्य एवं 9 केंद्र शासित प्रदेश हैं। इन्हीं 28 राज्यों में हरियाणा अपना विशेष स्थान रखता है। मेरी जन्मभूमि रोहतक (हरियाणा) होने के कारण मेरा हरियाणा के प्रति विशेष लगाव रहा है। हरियाणा दो शब्दों से मिलकर बना है। हरि+अयाण=भगवान का निवास या हरि+यान= जहाँ पर हरि(प्रभु) का यान उतरा था। हरियाणा के बारे में एक कहावत हैः

"देशों में देश हरियाणा,
जित दूध दही का खाना"

आजादी प्राप्त होने के पश्चात भी हरियाणा पंजाब प्रांत का ही हिस्सा था। परंतु 01 नवंबर 1966 को इसे एक अलग राज्य का दर्जा प्रदान किया गया। इसीलिए 01 नवंबर हरियाणा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। क्षेत्रफल के हिसाब से हरियाणा भारत का 21वां तथा जनसंख्या की दृष्टि से 18वां राज्य है। हरियाणा का क्षेत्रफल 44212 वर्ग कि.मी. है जोकि भूटान देश के क्षेत्रफल के बराबर है तथा हरियाणा की आबादी 2.81 करोड़ है जोकि सऊदी अरब की आबादी के बराबर है। देश के भौगोलिक क्षेत्र का 1.37% तथा जनसंख्या का 2 % होने के बावजूद हरियाणा ने विभिन्न क्षेत्रों में शानदार उपलब्धियां हासिल की हैं।

हरियाणा में वर्तमान में 22 जिले हैं (पहले 07 जिले थे)। हरियाणा का राजकीय फूल कमल का फूल, राजकीय पेड़ पीपल का पेड़, राजकीय पक्षी काला तितर तथा राजकीय पशु काला हिरण है। हरियाणा में 06 मंडल 22 जिले 93 तहसीलें 140 ब्लॉक तथा 6841 गांव हैं। जनसंख्या के अनुसार फरीदाबाद राज्य का सबसे बड़ा तथा चरखी दादरी सबसे छोटा जिला है। तथा क्षेत्रफल के हिसाब से सिरसा सबसे बड़ा तथा पंचकूला सबसे छोटा जिला है। हरियाणा का सबसे बड़ा गांव सिसाय है जोकि हिसार जिले में है। यह गांव 5152 एकड़ में फैला हुआ है। प्रसिद्ध पहलवान चंदगीराम इसी गांव के थे। हरियाणा में विधानसभा की 90, लोकसभा की 10 तथा राज्यसभा की 5 सीटे हैं।

पंडित भगवत दयाल शर्मा हरियाणा के प्रथम मुख्यमंत्री थे तथा वर्तमान में श्री मनोहर लाल खट्टर राज्य के मुख्यमंत्री है। पशुओं के प्रति प्रेम और आहार में दूध की प्रचुरता होने के कारण इसे दूध दही की नदियों वाला प्रदेश भी कहा जाता है। महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध तथा पानीपत की तीन ऐतिहासिक लड़ाईयां भी हरियाणा की पावन धरती पर लड़ी गई। हरियाणा भारत का प्रथम राज्य बना जिसमें 1970 में 100 प्रतिशत गांवों में बिजली पहुंची। कार, मोटरसाईकिल, फ्रिज, साईकिल,वैज्ञानिक उपकरण एवं ट्रैक्टर के उत्पादन में नबंर एक पर है। यमुना, घग्घर हरियाणा की प्रमुख नदियां हैं। प्रति व्यकित आय के आधार पर हरियाणा भारत का दूसरा सबसे धनी राज्य है। होली, दीपावली, तीज, दशहरा, गोगापीर व सांझी हरियाणा के प्रमुख त्यौहार हैं। गुड़गांव स्थित सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान हरियाणा का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है। फरीदाबाद की बड़खल, सोहना की दमदामा झील, करनाल की कर्ण झील, रोहतक की तिल्यार झील, हिसार की ब्लू बर्ड झील, यमुनानगर का हथनी कुंड हरियाणा की प्रमुख झीलें हैं।

ममता खरब, रानी रामपाल, अमित पंघाल, कपिल देव, बिजंदर सिंह, अखिल कुमार, जोगेंद्र शर्मा, योगेश्वर दत्त, दिनेश कुमार, सीमा पूनिया, साक्षी मलिक, सायना नेहवाल, सरदारा सिंह, विरेंद्र सहवाग, नीरज चोपड़ा, गीता फोगाट, प्रदीप नरवाल, विनय खत्री, बबीता फोगाट, चेतन शर्मा, युजवेंद्र चहल, संतोष यादव हरियाणा के कुछ खिलाडी हैं जिन्होंने देश विदेश में न केवल हरियाणा का बल्कि भारत का नाम भी रोशन किया है। सुरक्षा बलों में भी हरियाणा वासियों की वीरता इतिहास बताता है। मुझे हरियाणा एवं अपने देश भारत पर गर्व है। भगवान करे कि मेरा हरियाणा एवं भारत दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक्की करे।(जानकारी गूगल से संग्रहित)

जय हिंद, जय भारत

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना
देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

-महात्मा गांधी

एक सैनिक की इच्छा

दलबीर सिंह
डी.ई.ओ.

नहीं चाहिए हद से ज्यादा मुझे
आलीशान जीवन बिताने के लिए
मेरा ये जीवन समर्पित है
मातृ भूमि की रक्षा और
देश की शान बढ़ाने के लिए।

नहीं चाहिए सूत बूट मुझे।
पैरों और बदन के लिए
सेना की वर्दी ही काफी है
मेरे इस सैनिक जीवन के लिए।

नहीं चाहिए छप्पन भोग मुझे
भूख पेट की मिटाने के लिए
मैं तो भूखा प्यासा भी लड़ता रहूँगा
शान देश की बचाने के लिए।

भारत माता की जय का नारा ही काफी है।
दुश्मन के छक्के छुड़ाने के लिए।
अंत में बस है यही चाहत जीवन के लिए
छूटे अगर मेरी सांसें तो
मिले तिरंगा कफन के लिए।

चुटकुले

ज्योति
डी.ई.ओ.

- **पप्पू** अपना पाठ याद करके नहीं आया।

  टीचर- अपना पाठ याद क्यों नहीं किया ?

  पप्पू- जी मैम, कल रात को जैसे ही पढ़ने बैठा,
  लाइट चली गई।

  टीचर- तो फिर लाइट नहीं आई क्या ?

  पप्पू- आई, पर फिर से जैसे ही पढ़ने बैठा फिर चली गई।
  टीचर- अरे तो फिर लाइट नहीं आई क्या?

  पप्पू- आई थी, पर मैं फिर इस डर से पढ़ने नहीं बैठा कि फिर से ना चली जाए।

- **पप्पू-** मां, मैं जा रहा हूं, मोदी जी का भाषण सुनने,

  माँ- कहाँ,

  पप्पू- इंडिया गेट

  माँ- पर आज तो लाल किले पर झंडा फहराया जाता है

  पप्पू- कोरोना वायरस माहमारी में इंडिया गेट पर कोई नहीं होगा। अकेले बैठकर भाषण सुनूंगा और सोशल डिस्टेंस का पालन भी करूंगा। हूं न समझदार।

- **पत्नी-** तुमने कभी मुझे सोना, हीरा या मोती गिफ्ट नहीं दिया।

  पति ने तुरंत एक मुट्ठी भर मिट्टी उठाकर पत्नी के हाथ में दी।

  पत्नी - ये क्या है ?

  पति - मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती, मेरे देश की धरती ।

उपकार

राजेश साह
वरिष्ठ लेखाकार

अफ्रीका एक बड़ा महाद्वीप है। उस महाद्वीप में बहुत से घने वन हैं और उन वनों में सिंह, भालू, गैंडे जैसे भयानक जानवर पाये जाते हैं। बहुत से लोग शेर की खाल पाने के लिए उसे मारते हैं। गर्मी के दिनों में हाथी जिस रास्ते से झरने पर पानी पीने जाते हैं, उसे रास्ते में लोग बड़ा गहरा गड्ढा खोद देते हैं और उस गड्ढे के चारों और लकड़ियों को भाले के समान नोक वाली करके गाड़ देते हैं। फिर गड्ढे को पतली लकड़ियों और पत्तों से ढक देते हैं। जब हाथी पानी पीने निकलते हैं तो उनके दल का आगे वाला हाथी गड्ढे के ऊपर पत्तों की टहनियाँ होने के कारण गड्ढे को देख नहीं पाता और जैसे ही टहनियों पर पैर रखता है हाथी गड्ढे में गिर जाता है। पीछे से हाथी पकड़ने वाले गड्ढे में एक और रास्ता खोदकर दूसरे पालतू हाथियों की सहायता से उस हाथी को पकड़ लेते हैं।

हाथी पकड़ने वाले उस हाथी को लाकर पहले कई दिनों तक भूखा रखते हैं जिससे कमजोर हो जाने के कारण निकलते समय हाथी शांत रहता हैं। भूख के कारण हाथी छटपटाने लगता है तब कोई आदमी उसे चारा देने जाता है। चारा देने के बहाने वह आदमी हाथी से धीरे-धीरे जान-पहचान बना लेता है और फिर हाथी को वही सिखाता है। सिखाने के बाद लोग हाथी को बेच देते हैं । कई बार हाथी पकड़ने के लिए जो गड्ढा बनाया जाता है, उस में रात को धोखे से हिरण, नीलगाय, चीता या जंगल के दूसरे जानवर भी गिर जाते हैं। गड्ढा बनाने वाले उन्हें भी निकाल लेते हैं।

अफ्रीका के जंगल में एक बार हाथी पकड़ने वालों ने हाथी को फँसाने के लिए गड्ढा बनाया और ढक दिया। रात में एक शेर उस गड्ढे में गिर पड़ा। शेर किसी छोटे जानवर को पकड़ने के लिए दौड़ा होगा। एक शिकारी आया और उसने शेर को गड्ढे में गिरा हुआ देखा। वीर पुरुष किसी को दुःख में देखकर उसे मारते नहीं बल्कि उसकी सहायता करते हैं। शेर बार-बार उछलता परंतु गड्ढे के चारों ओर लगी नोंक वाली

लकड़ियों से उसे चोट लगती और वह फिर से उसी गड्ढे में गिर जाता। शिकारी ने एक रस्सी को दो लकड़ियों से बांधा और पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर से रस्सी खींच कर उसने लकड़ियाँ उखाड़ दी। शिकारी ने नीचे से लकड़ियाँ इसीलिए नहीं उखाड़ी कि कहीं गड्ढे से निकलने के बाद शेर उसे ही ना मार दे। दो लकड़ियाँ उखड़ने से शेर को रास्ता मिल गया। वह उछल कर गड्ढे से बाहर निकल आया।

एक दिन वह शिकारी एक झरने के किनारे बंदूक रखकर पानी पीने बैठा था। वह बहुत थका हुआ था इसीलिए लेट गया और उसे नींद आ गयी। इतने में एक चीता आया और शिकारी को मारने के लिए उस पर चढ़ बैठा। बेचारा शिकारी डर के मारे चिल्ला भी न सका। इतने में एक भारी-भरकम शरीर वाला सिंह जोर से गर्जा। उसकी गर्जना सुन कर चीता दुम दबाकर भागने लगा पर सिंह चीते के ऊपर कूद पड़ा और उसने चीते को चीर-फाड़ डाला। शिकारी ने सोचा चीते को मार कर सिंह अब मुझे मारेगा लेकिन सिंह आया और शिकारी के सामने बैठ कर पूंछ हिलाने लगा। शिकारी ने पहचान लिया कि यह वहीं सिंह है जिसकी गड्ढे से निकलने में उसने सहायता की थी। सिंह जैसा भयंकर जानवर भी अपने उपकार करने वालों को नहीं भूला था। हम तो मनुष्य है। हमें भी किसी के किए हुए उपकार को नहीं भूलना चाहिए और उपकारी की सेवा-सहायता करने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है

जिसे बिना भेद भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

–मदन मोहन मालवीय

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है

– डॉ. सम्पूर्णानंद

डिजिटल इंडिया

हिंदी पखवाड़ा 2019 में पुरस्कृत निबंध (हिंदीत्तर भाषी)

सुमा जी. कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 01 जुलाई 2015 को दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आरंभ किया। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य इस देश के शासन में पारदर्शिता लाना और लोगों को इंटरनेट से जोड़कर सरकार द्वारा चलाया हर काम या योजना को हर एक नागरिक तक पहुंचाना। सरकारी काम में लगने वाले समय और मैनपावर कम करना है।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए बजट में 1,13,000 करोड़ का प्रावधान रखा गया है और देश के प्रतिष्ठित उद्योगपतियों जैसे अनिल अंबानी, अजीम प्रेमजी, साइरस मिस्त्री आदि को शामिल करके 4.5 लाख करोड़ रुपये का निवेश करवाया गया है और 2018 के बजट में सबसे अधिक 3073 करोड़ का आंबटन किया गया।

डिजिटल इंडिया के अंतर्गत राष्ट्र के सभी ग्रामों को इंटरनेट के द्वारा जोड़ना, हर ग्राम में ऑप्टिकल फाइबर केबल लगाना, हॉटस्पॉट, वाइफाई आदि की सुविधा देना लक्ष्य है। इससे सरकारी कामकाज में पारदर्शिता आएगी एवं साथ ही साथ काम के लिए दूर दराज इलाकों में जाना, घंटो लाईन में लगना नहीं पड़ेगा। लोग इंटरनेट के द्वारा अपने ही (स्थान) गांव से देश-विदेश के समाचार प्राप्त कर सकते हैं और ऑनलाइन ही बैंकिंग एवं बुकिंग आदि कर सकते हैं।

डिजिटल इंडिया के जरिये बैंकिग व्यवस्था में भी सुधार आएगा। ऑनलाइन मोबाइल बैंकिंग से नगद लेन-देन कम होगा और उससे भ्रष्टाचार में अवश्य ही कमी आएगी। डिजिटल इंडिया- इस की निगरानी प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली कमेटी करेगी जिसमें वित्त, मानव संसाधन, आईटी मंत्रालय सदस्य होंगे। डिजिटल इंडिया के द्वारा छात्रों को ई-लाइब्रेरी, स्कॉलरशिप, ई-पुस्तक आदि की सुविधा दी जा सकती है। इस से यहां के छात्रों को इंटरनेशनल स्तर का प्लेटफार्म मिलेगा और वे देश का नाम ऊँचा करेंगे।

कृषि क्षेत्र में होने वाले नये अनुसंधान या मिट्टी, मौसम आदि की जानकारी कृषकों को जल्दी मिलने से कृषकों के जीवन में सुधार आएगा। डिजिटल इंडिया देशहित में मानो एक महत्वाकांक्षी योजना है। इसके सही कार्यान्वयन से भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा। भारत को एक सुपर पावर राष्ट्र बनाने में डिजिटल इंडिया की अहम भूमिका होगी। देश के प्रत्येक नागरिक को कम्प्यूटर की जानकारी दिलाना भी डिजिटल इंडिया का एक कार्यक्रम है।

इस देश में लगभग 25 करोड़ लोगों का अनपढ़ या निरक्षर होना डिजिटल इंडिया के सामने एक गंभीर चुनौती है। सब आंकड़े ऑनलाइन होने पर साईबर क्राइम में बढोतरी हो सकती है। सरकार को इस बारे में ठोस कदम उठाने होंगे। सूचना डाटा भी महत्वपूर्ण है। इस युग में भारत को विकसित एवं डिजिटल सुपर पावर बनाने के लिए देश के प्रत्येक नागरिक को कम्प्यूटर के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है। हर गांव, हर शहर को इंटरनेट से जोड़ना और सरकारी योजनाओं को हरएक तक पहुँचाना ही इस योजना का उद्देश्य है । वैसे हम दुनिया के सभी राष्ट्रों से संस्कार और मानव मूल्यों में आगे हैं। अब डिजिटल इंडिया के माध्यम से इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी (सूचना तकनीकी) में भी हमारा झंडा फहराएगा

डिजिटल इंडिया

हिंदी पखवाड़ा 2019 में पुरस्कृत निबंध (हिंदी भाषी)

शिखा गोयनका
डी.ई.ओ.

एक समय था जब किसी भी काम को करने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता था। किसी सरकारी दफ्तर में जाना होता था तो साथ में दस्तावेजों का बड़ा सा पुलिंदा हुआ करता था । परंतु कंप्यूटर, इंटरनेट के आगमन ने सब कुछ बदल कर रख दिया है। यहां तक कि विदेशों के समाचार भी पल भर में मोबाइल या कंप्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध हो जाते हैं।

यही है डिजिटलीकरण। कंप्यूटर, मोबाइल जैसे उपकरणों की सहायता तथा इंटरनेट के तकनीकी उपयोग से जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं को उपलब्ध कराना तथा मानव जीवन को सरल बनाना डिजिटलीकरण है। भारत में सरकारी कार्यालयों तथा सरकारी काम-काज का भी डिजिटलीकरण किया जा रहा है। इसी दिशा में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 01 जुलाई 2015 को डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की शुरुआत की थी।

डिजिटल इंडिया भारत सरकार का एक बेहद अहम कदम है। इस कार्यक्रम का ध्येय वाक्य है- “पावर टू इम्पावर”। इसका सीधा सा संदेश है कि डिजिटल इंडिया कार्यक्रम में भारत को सक्षम एवं समृद्ध बनाने की पूरी क्षमता है। दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों श्री रवि शंकर प्रसाद एवं श्री एस.एस. अहलूवालिया के मार्गदर्शन में शुरू किए गए इस कार्यक्रम का संचालन इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा वित्त मंत्रालय के अंतर्गत किया जाता है। इस कार्यक्रम की तीन आधार शिलाएं हैं- भारत में सूचना प्रौद्योगिकी एवं डिजिटलीकरण के लिए जरूरी आधारिक संरचनाएं तैयार करना, भारत सरकार के कामों का डिजिटलीकरण करना तथा देश के नागरिकों को डिजिटल साक्षर बनाना।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत सरकार कई योजनाएं चला रही है। आज बिजली एवं पानी का बिल आप इंटरनेट का प्रयोग कर भर सकते हैं । आयकर का भी भुगतान ऑनलाइन कर सकते हैं। पासपोर्ट, वीजा, वोटर कार्ड, पैन कार्ड यहां तक कि सरकारी नौकरियों के आवेदन भी ऑनलाइन भरे जा सकते हैं। डिजिटल इंडिया जन-सामान्य के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाया है।

डिजिटल इंडिया के ही अंतर्गत भारत सरकार ने डिजिलॉकर की सुविधा भी जारी की है। अब आप अपने महत्वपूर्ण दस्तावेजों को स्कैन कर डिजिलॉकर में सुरक्षित रख सकते हैं। इससे आपके दस्तावेज चोरी होने का भी खतरा नहीं रहता। आज लगभग 35 संस्थान डिजिलॉकर के स्कैंड दस्तावेजों को स्वीकार करते हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार मार्च 2019 तक डिजिलॉकर के 02 करोड़ से ज्यादा उपयोगकर्ता हो गए हैं जिनके 350 करोड़ से भी ज्यादा दस्तावेज डिजिलॉकर में सुरक्षित हैं।

इसी कड़ी में सरकार ने ई-गवर्नेंस अर्थात ई-शासन भी लागू किया है। इससे सरकार एवं आम लोगों में ई-मेल के जरिए सीधा संवाद स्थापित हुआ है। सरकारी काम-काजों में पारदर्शिता आई है तथा सरकारी अफ़सरों की जवाबदेही भी बढ़ी है। साथ ही इससे सरकारी दफ़्तरों की विश्वसनीयता में भी सुधार हुआ है।

डिजिटल इंडिया कहने को सिर्फ एक कार्यक्रम है किंतु इसके चौतरफा परिणाम देखने को मिले हैं। सरकारी सेवाओं में दक्षता बढ़ी है। सरकारी काम-काजों में होने वाला विलंब भी कम हुआ है। आज आपको बिजली का बिल भरने के लिए लंबी कतार में खड़े रहने की जरूरत नहीं हैं। आप अपने घर पर बैठे-बैठे इंटरनेट की मदद से दो मिनट में बिजली का बिल भर सकते हैं ।

डिजिटलीकरण का सीधा असर पर्यावरण पर भी देखने को मिला है। कागज की जगह इंटरनेट के उपयोग से पेड़ों की कटाई पर रोक लगेगी। शिक्षा के क्षेत्र में भी आज आपको किताबों की प्रतियाँ ऑनलाइन मिल जाती है। यहां तक कि सरकार ने एन.सी.ई.आर.टी की किताबें भी इंटरनेट पर उपलब्ध करा दी हैं। देश-विदेश की किताबें, जर्नल सभी कुछ आप तक पहुंच चुके हैं।

जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी तरह फ़ायदों के साथ-साथ डिजिटल इंडिया के कुछ नुकसान भी हैं। सर्वप्रथम तो आधारभूत संरचना की कमी है। भारत को अभी भी इस दिशा में काफी काम करने की जरूरत है । इंटरनेट सेवाओं और सतत बिजली आपूर्ति की सुविधाओं को शहर ही नहीं बल्कि गांव-गांव, घर-घर तक पहुंचाने की जरूरत है।

इसके साथ ही साइबर सुरक्षा पर भी बहुत ध्यान देने की जरूरत है। हैकिंग अभी भी एक बड़ी समस्या है। डिजिटल इंडिया ने बैंकों का डिजिटलीकरण कर बैंक की सुविधाओं को हमारे मोबाइल और कंप्यूटर तक जरूर पहुंचा दिया है परंतु साथ ही धोखाधड़ी के मामलों में भी बढ़ोतरी हुई है। सरकार ने ई-गवर्नेंस के जरिए लोगों की प्रतिक्रियाएं और सुझाव लेने तो शुरू कर दिए हैं किंतु जरूरत उन सुझावों पर काम करने की भी है। तभी सरकार और आम आदमी के बीच की दूरी कम होगी ।

एक बड़ी समस्या लोगों में डिजिटल साक्षरता की कभी भी है। गाँवों में रहने वाले अधिकांश लोग कंप्यूटर एवं इंटरनेट का प्रयोग ठीक से नहीं करना जानते। इस दिशा में अभी सरकार को और प्रयास करने की जरूरत है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि डिजिटल इंडिया ने भारत की प्रगति में अहम भूमिका निभाई है। आज भारत ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। आवश्यकता है तो बस कुछ बुनियादी बातों पर ध्यान देने की और लोगों को प्रोत्साहित करने की। इस दिशा में सरकार ने काफी काम किए हैं और आशा है कि भविष्य में भी ये काम जारी रहेंगे क्योंकि -

"डिजिटल भारत सक्षम भारत"

कावेरी के पूर्व अंकों से...

मेरी छोटी सी रसोई से

-रूप सी.आर.

बुजुर्गों और नौजवानों के लिए पेश है एक स्वादिष्ट व्यंजन जो हर पल में जितना चाहे उतनी मात्रा में अनुभव करके अपना जीनव संतुष्ट बना सकते हैं।

<u>व्यंजन का नाम- </u>संतुष्टता

<u>सामग्री-</u> ढाई प्याला सहनशीलता, दो प्याला तालमेल, एक प्याली सहानुभूति, एक प्याला क्षमा, तीन चम्मच दया, डेढ़ प्याला उदारता।

<u>प्रक्रिया-</u>

एक बड़े प्यार के प्याले में सहनशीलता और सहानुभूति को अच्छी तरह से मिलाइए। इसके बाद क्षमा और दया को उस प्याले में डालकर घोलिए। अब, उस मिश्रण को सुगंधित सदभावना से भरी आनंद की ह्रदय में रखिए। फिर सावधानी से उस मिश्रण को तालमेल से ढकिए। व्यंजन को उदारता के साथ और मिठास बनाइए। अंत में उसे भरोसे के चूल्हे में पकाकर प्यार भरी छोटी छोटी मुस्कुराहटों से सजाकर सबको परोसिए।

उलझन-सुलझन

- एम.एस.पद्मा

सवार हुई मुझमें लिखने की धुन
परंतु लिखूँ क्या?
कहानी या कविता
कर नहीं पायी निर्णय
फंस गई मैं उलझन में
कहानी भी लिखूँ
कविता भी लिखूँ सुलझ गई उलझन।

सवार हुई मुझमें लिखने की धुन
परंतु लिखूँ क्या?
कहानी या कविता
कर नहीं पायी निर्णय
फंस गई मैं उलझन में
समय गुजरता गया
उलझन उलझती गई
कुछ लिख न पाई मैं।

लिखने की धुन न छूटी
लेकिन मैं छूटी मायके से
पहुँची मैं ससुराल,
लिखने की धुन साथ लिए।
जुड़वा बच्चे संभाले।
परंतु लिख नहीं पाई

अचानक दिमाग में दिया चमक उठा
जुड़वा बच्चों के नाम रखे
कहानी और कविता
उलझन सुलझ गई
लिखने की धुन उतर गई।

राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान

एन.जी.गायत्री.

भारत एक महान एवं विशाल देश है। इसमें विभिन्न राज्य हैं और विभिन्न राज्यों की विभिन्न भाषाएँ हैं। बंगाल की बंगला, असम की असमिया, महाराष्ट्र की मराठी इत्यादि। किंतु जो भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधती है- वह हिंदी ही है। अंग्रेजी शासनकाल से भले ही अंग्रेजी में राजकाज करने की मान्यता मिली हो। लेकिन जिस प्रकार हमने अंग्रेजी शासन को सात समंदर पार भेजा उसी प्रकार उनकी भाषा को भी बाहर करने की आवश्यकता है। संसार के जितने भी स्वाधीन राष्ट्र हैं, उनकी अपनी राष्ट्र भाषाएँ हैं- जैसे रूस की रूसी फ्रांस की फ्रेंच, चीन की चीनी इत्यादि।

जब भारतवर्ष स्वाधीन हो गया, तब उसे भी अपनी राष्ट्र भाषा की जरूरत थी। जिस प्रकार पूरे शरीर की तन्दुरुस्ती के लिए मस्तिष्क की आवश्यकता है उसी प्रकार एक राष्ट्र की एकता के लिए एक राष्ट्र भाषा की भी आवश्यकता है। भारत में यह सौभाग्य हिंदी को प्राप्त हुआ। हिंदी राष्ट्र भाषा हो- इस पक्ष में अनेक तथ्य हैं। किंतु हमें यह समझना चाहिए कि हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने बहुत सोच-समझकर, स्वार्थ का चश्मा लगाए बिना और देश की उन्नति और एकता को ध्यान में रखते हुए हिंदी को राष्ट्र भाषा स्वीकार किया था। किसी भी राष्ट्र की उन्नति एकता में बसती है। जब एक सामान्य राष्ट्र न हो, देश का शासन करना कठिन हो जाएगा। तो देश की उन्नति सोचना भी असंभव कार्य है। हम पहले ही कह चुके हैं भारत अनेक भाषाओं की भूमि है और इसी भूमि की महानता है अनेकता में एकता।

भारत में अनेक भाषा और उनके बोलने वालों को एक साथ जुड़ने के लिए एक राष्ट्र भाषा की आवश्यकता थी। जो हिंदी को ही प्राप्त हुआ। हिंदी ही क्यों यह प्रश्न अनेक लोगों के मन में जाग उठा। इसका अपना कारण है। जिस प्रकार जनतांत्रिक राष्ट्र में बहुसंख्यक पक्ष का महत्व होता है उसी प्रकार भाषा में भी। भारत

में हिंदी बोलने वाले सबसे अधिक लोग हैं। दूसरी बात हिंदी भाषा अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में सरल है। भारत में अधिकतर लोग हिंदी के माध्यम से अपने विचारों का आदान- प्रदान करते हैं। व्यापार, व्यवसाय, टूरिज्म आदि हिंदी द्वारा ही संपन्न हो रहा है। भारत के उत्तर का व्यक्ति जब सुदूर दक्षिण के रामेश्वरम पहुँचता है तब वह अंग्रेजी की शरण नहीं लेता है। उसका सारा काम हिंदी से ही चल जाता है। भारत के किसी भी कोने में हिंदी जानने से काम चल सकता है।

आज के युग में उद्योग निमित्त भारत के किसी भी कोने में नौकरी करनी पड़ती है। अपने प्रान्त को छोड़कर दूसरे प्रान्त में निवास करना मुश्किल होता है। लेकित हिंदी ने इस मुश्किल को आसान कर दिया है। हिंदी जानने से भारत के किसी भी कोने में नयापन महसूस नहीं होता। इससे हमें ऐसा महसूस होता है कि उत्तर हो या दक्षिण, पूरब हो पश्चिम हम सब एक हैं- हम सब भारतीय हैं। महात्मा गाँधी ने कहा था " अगर हम भारत को एक राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो इसकी राष्ट्र भाषा हिंदी ही हो सकती है। अंग्रेजी केवल अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। राष्ट्रीय भाषा नहीं हो सकती"।

सुभाष चंद्र बोस का कहना था- " प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी के प्रचार से मिलेगी उतनी किसी दूसरी चीज से नहीं मिलेगी। अगर हम लोग तन मन धन से प्रयत्न करें तो वह दिन दूर नहीं जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिंदी"। इससे हमें यह मालूम पड़ता है कि स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी का कितना महत्व था।

भारत वर्ष की एक मात्र भाषा हिंदी है जो सारे देश को (कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक) एक सूत्र में बाँधती है। हिंदी ने प्रादेशिक ईष्या और द्वेष को हटाया है। जब व्यक्ति में ईर्ष्या और द्वेष की भावना नहीं होती है तो हर एक के मन में यह भावना उत्पन्न होती है कि हम सब भारतीय हैं। हम जियेंगे तो भारत के लिए और मरेंगे तो भारत के लिए। जब ऐसी एकता की भावना जाग उठती है, तो राष्ट्र बल बढ़ता है (एकता में बल है)। ऐसे राष्ट्र का गौरव एवं मर्यादा स्वयं ही बढ़ेगा। जब राष्ट्र बलवान होगा, तब कोई विदेशी शत्रु भारत को आंख दिखाने का दुस्साहस नहीं कर पाएगा।

दायित्व

-चित्रा रमेश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। संसार के सभी जीवों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें अपनी बुद्धि का सार्थक प्रयोग करने की क्षमता है। वह हमेशा एक समूह में अपना जीनव व्यतीत करना चाहता है। अतएव वह बहुत सारे रिश्ते-नातों से सदैव घिरा रहता है। परंतु इन सभी सगे-संबंधियों के प्रेम की तुलना माता-पिता तथा घर के अन्य वरिष्ठ सदस्य जैसे दादा-दादी और नाना-नानी के वात्सल्य से नहीं की जा सकती। अपनी संतान के लिए इनका प्यार निश्छल और पवित्र होता है। अपने सारे सुखों को त्यागकर वे अपनी औलाद का पालन-पोषण करते हैं। संतान को कोई कष्ट नहीं होने देते। सदैव उनके लिए चिंतित रहते हैं। बच्चे उनके लिए आनंद के केंद्र होते हैं। बच्चों की एक हल्की सी मुस्कान उनके दुख दर्द दूर कर देती है तथा हृदय में खुशी की मंदाकिनी बहा देती है और उनका थोड़ा सा दुख बुजुर्गों के हृदय में शूल सा चुभ जाता है। सारांश यह है कि घर के इन वरिष्ठ सदस्य के जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने बच्चों को समाज में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पहुँचाना होता है। अपने पूरे जीवन की आहुति देकर वे अपने लक्ष्य में सफल भी हो जाते हैं।

प्राचीन काल में बुजुर्गों की बात पत्थर की लकीर समझी जाती थी। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने पिता महाराज दशरथ के वचन के पालन के लिए अपनी युवा अवस्था के चौदह वर्ष वनवास में बिताए। पर आज के जमाने में समाज के वरिष्ठ सदस्य ही सबसे ज्यादा उपेक्षित हैं। उनके अनुभवों का कोई मूल्य नहीं है। जब ये शारीरिक रूप से क्षीण होने लगते हैं तो उन्हें घर से कुड़े की तरह उठाकर सड़क पर या किसी वृद्धाश्रम में पटक दिया जाता है। अगर वे समाज में व्याप्त किसी अनैतिकता का विरोध करना चाहें तो कहा जाता है कि वे सठिया गए हैं, यानि कि शाशीरिक ही नहीं मानसिक रूप से भी जर्जर हो गए हैं। जिन बच्चों को उन्होंने बोलना या चलना सिखाया वे उनसे बात करने में भी कतराने लगते हैं। जिन्होंने अपने बच्चों के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया उन्हें ही भार समझा जाता है।

विद्वानों का कहना है कि जीवन भर अपने बुजुर्गों की सेवा करने पर भी उनका ऋण नहीं उतरता है। जिनको अपने बड़ों की सेवा करने का मौका मिलता है वे बड़े भाग्यशाली होते हैं। हरएक मनुष्य चाहता है कि उसकी संतान उन्हें सुख और उचित सम्मान दें। हमारे व्यवहार और चरित्र का प्रभाव हमारी आने वाली पीढ़ीयों पर पड़ता है। यदि हम अपने बुजुर्गों तथा वरिष्ठ जनों के प्रति अपने कर्तव्य से विमुख होंगे तो हमारी आने वाली पीढ़ी भी हमारे प्रति कर्तव्यनिष्ठ व सेवारत नहीं होगी। अतः यदि हम एक सभ्य एवं उन्नत समाज के नागरिक कहलाना चाहते है तो हमें अपने समाज के वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान करना चाहिए। उनके अनुभवों से सीख लेकर अपने जीवन एवं समाज को और प्रगतिशील बनाना चाहिए। उनकी सुख-सुविधा का भरपूर ख्याल रखना चाहिए। उनकी भावनाओं की कद्र करना चाहिए। जिस प्रकार हम अपने बच्चों को समय देते हैं उसी तरह अपने बुजुर्गों के साथ भी दिन का कुछ समय व्यतीत करना चाहिए। उनकी जरूरतों को समझने और पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए।

अपने व्यवहार से अपने बुजुर्गों को यह एहसास दिलाना चाहिए कि वे अभी भी वांछनीय हैं तथा समाज के अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग है। कुछ कल्याण कार्यों का शुभारंभ तो हो गया है जैसे कि सरकार की पेंशन योजना, हवाई जहाज एवं रेल टिकटों की दरों में कटौती इत्यादि। पर हमें अभी और भी कई योजनाएँ बनानी होंगी। जैसे बुजुर्गों द्वारा किए गए निवेशों पर बैंकों द्वारा अधिक ब्याज की दर, बिल्कुल बेसहारा बुजुर्गों के लिए अच्छे वृद्धाश्रमों का निर्माण, अस्पतालों में मुफ्त अथवा कम खर्च में इलाज इत्यादि की व्यवस्थाएँ की जानी चाहिए। जब हम अपने परिवार और समाज के बुजुर्गों के प्रति जागरूक होंगे तभी हमारी शिक्षा सार्थक होगी।

भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिंदी महानदी

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दीवान सर्वश्री विश्वेश्वरय्या

सण्णि फ्रांसिस पी.

हमारे देश के बड़े-बड़े नेता भारत की स्वतंत्रता के लिए आंदोलन करते समय दक्षिण का एक इंजीनियर, अकेले भारत को आर्थिक और औद्योगिक दृष्टि से आगे बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहा था। इस महान इंजीनियर का नाम था सर्वश्री मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या। विश्वेश्वरय्या का जन्म 15 सितंबर 1861 में एक निम्न मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। विशाल हैदराबाद कर्नाटक क्षेत्र के कुरुनूल जिले में मोक्षगुंडम नाम का एक गाँव है (आज आन्ध्र प्रदेश राज्य में शामिल है)। कई सौ साल पहले विश्वेश्वरय्या के पूर्वज यहीं रहते थे। वंश परंपरा के अनुसार नाम के आगे पूर्वजों के गाँव का नाम भी जोड़ दिया जाता है, इस प्रकार विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या पड़ा।

विश्वेश्वरय्या के जमाने में भारत विदेशी शासन में अज्ञानता और सामाजिक संकीर्णताओं से जकड़ा हुआ था। अंधविश्वासों की भरमार थी। चारों ओर गरीबी थी। यह देखकर विश्वेश्वरय्या को बहुत दुख होता था। वह सदा यही सोचते रहते थे कि किस प्रकार भारत को एक ऐसा समृद्ध और संपन्न देश बनाया जाए, जिससे सभी नागरिक आधुनिक विज्ञान से प्राप्त सुख-सुविधाओं का लाभ उठा सकें। विश्वेश्वरय्या ने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया और वह अपने जीवन के अंतिम दिनों तक काम करते रहे।

विश्वेश्वरय्या ने अपना जीवन ब्रिटिश शासित मुम्बई प्रेसिडेन्सी कॉलेज में एक इंजीनियर के पद से प्रारंभ किया। मेहनत, तीक्ष्ण बुद्ध और ईमानदारी के बल पर वे शीघ्र उस सर्वोच्च पद पर पहुँच गए, जहाँ तक कोई भारतीय उन दिनों नहीं जा पाया था।

उनके जीवन की निम्नलिखित मुख्य घटनाएँ हमें हमेशा रोमांचित करती हैं-

1884- मुम्बई लोक कल्याण विभाग में सहायक इंजीनियर के पद पर।

1909- हैदराबाद में विशेष सलाहकार- इंजीनियर नियुक्त हुए। मैसूर में मुख्य इंजीनियर नियुक्त हुए और कृष्णराजसागर बाँध योजना शुरू किए।

1912- मैसूर राज्य में दीवान के रूप में नियुक्त हुए।

1915- मैसूर व बेंगलूरु पब्लिक लाईब्रेरी की स्थापना।

1923- इंडियन साइंस कांग्रेस के अध्यक्ष।

1925- बेंगलूरू के लिए पीने के पानी की योजना।

1939- वायुयान फैक्ट्री की योजना।

1951- मेरे कामकाजी जीवन के संस्मरण नामक पुस्तक का प्रकाशन।

1955- भारत रत्न से सम्मानित।

1960- जन्म शताब्दी समारोह।

विश्वेश्वरय्या का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था, लेकिन अपने कठोर परिश्रम और आत्मविश्वास के बल पर वे एक दिन भारत रत्न जैसा सम्मान पा सकें। वे सौ वर्षों से अधिक जीवित रहे। विश्वेश्वरय्या ने सदा नियमित जीनव बिताया। जब वे सरकारी सेवा में थे तब भी वे एक निश्चित दिनचर्या के अनुसार कार्य करते थे।

विश्वेश्वरय्या की जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर पंडित नेहरू ने कहा था कि एक ऐसे व्यक्ति का जो स्वप्नद्रष्टा विचारक और कर्मनिष्ठ है हम किस प्रकार सम्मान करें? आपके जो स्वप्न साकार हो चुके हैं, वे अपने लिए नहीं वरन देश के लिए थे। भारत के महान, सपूत विश्वेश्वरय्या का देहांत 14 अप्रैल 1962 को बेंगलूरू में हुआ। विश्वेश्वरय्या अब हमारे बीच में नहीं हैं परंतु उनका जीवन आनेवाली पीढ़ियों को सदा प्रेरणा देता रहेगा। उनकी याद में उनका जन्म दिवस आज भी **15 सितंबर** को **अभियांत्रिकी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

जीवन की चाबी

वी.पी.मागी।

दूसरों को क्षमा करने की शक्ति न होने के कारण प्रेम का बहाव रुक जाता है और इससे परस्पर संबंध बिगड़ जाते हैं। क्षमा करने की शक्ति प्रेम की शक्ति है। यह परमात्मा की शक्ति है। क्षमा के बारे में बाइबिल में एक कहानी है। एक आदमी के दो पुत्र थे। छोटे बेटे ने कहा, पिताजी मुझे संपत्ति में अपना भाग अभी दे दीजिए। तब उस आदमी ने अपनी संपत्ति दोनों बेटों में बाँट दी। कुछ दिनों के बाद छोटे बेटे ने अपनी संपत्ति बेच दी और सारा धन लेकर घर से निकल गया। वह दूर देश चला गया और सारी संपत्ति खाने पीने, जुआ वेश्याओं के पीछे उड़ा दी। तब उस देश में भयंकर अकाल पड़ा और वह भूख से मरने लगा। वह उस देश के एक आदमी के यहाँ काम करने गया। उसने उसे अपने सुअर चराने भेज दिया। वह इतना भूखा था कि वह सुअर का भोजन खाना चाहता था। परंतु किसी ने कुछ नहीं दिया।

अब उसे अपनी गलती समझ में आई और उसने सोचा, मेरे पिता के घर में कितने मजदूरों को रोटी मिलती है और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अभी अपने पिता के पास जाऊँगा और उनसे क्षमा मागूँगा। तब वह उठकर अपने घर की और चल दिया। वह अब घर की ओर निकल पड़ा। उसके पिता ने उसे दूर से ही देख लिया। पिता का हृदय दया से भर आया। उसने दौड़कर अपने पुत्र को गले से लगा लिया। पुत्र बोला, पिताजी मैंने परमेश्वर के विरुद्ध और आपके प्रति पाप किया है। मैं अब आपका पुत्र कहलाने योग्य नहीं रहा। मुझे अपने मजदूर के रूप में रख लीजिए। परंतु उसके पिता ने नौकरों को बुलाकर कहा, जल्दी अच्छे से अच्छे कपड़े लाकर इसको पहनाओं और इसकी उंगली में अंगूठी और पैरों में जूते पहनाओं। अच्छे पकवान बनाओं। हम मिलकर खाएँ और आनंद मनाये क्योंकि मेरा बेटा जो मर गया था वह फिर जिंदा हो गया है। वह जो खो गया था अब फिर मिल गया है।

बड़ा लड़का जो खेत में था जब लौटकर खर के निकट पहुँचा तो उसे गाने बजाने और नाचने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने एक नौकर को बुलाया और इसके विषय में पूछा। नौकर ने कहा, आपका भाई आया है और आपके पिता उत्सव मना रहे हैं। इसपर वह क्रोधित हो गया और उसने घर के अंदर जाना नहीं चाहा। तब पिता उसे मनाने के लिए बाहर आए। लड़के ने कहा, देखिए मैं इतने बरसों से आपकी सेवा करता आया हूँ। मैंने कभी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। फिर भी आपने मुझे अपने मित्रों के साथ आनंद मनाने के लिए कभी नहीं कहा। आपका यह छोटा बेटा जिसने आपकी संपत्ति उड़ा दी है, आप उसके लिए उत्सव मना रहे हैं। इस पर पिता ने उससे कहा, बेटा तुम मेरे साथ रहते हो और जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है। परंतु तुम्हारा यह भाई मर गया था अब फिर जिंदा हो गया है। यह जो खो गया था अब फिर मिल गया है।

यह कहानी हमें एक महान सत्य की सीख देती है। यह पिता ईश्वर के समान है। हम जब अपने पापों के द्वारा अपने ईश्वर तुल्य प्यारे पिता से दूर चले जाते हैं तब हम उस छोटे पुत्र के समान है। और जब हम दूसरों को क्षमा करने से पीछे हटते हैं तब हम बड़े बेटे के समान है। यदि वह साधारण पिता होता तो कहता- उसे आने दो मैं उसे सिखाऊँगा। परंतु यह पिता साधारण नहीं है। वह अपने पुत्र से मिलने के लिए दौड़कर जाता है उसे अपने गले से लगा लेता है और उसको चूम लेता है। वह अपने नौकरों को बुलाकर उनसे कहता है जाओ इसे नहाने का पानी दो, चाय पिलाओ और बड़े भोजन की तैयारी करो। प्रभु की करुणा सभी लोगों के लिए है। जो खोजता है वह जरूर पाएगा। संत पौलुस इफिसियों के पत्र में इस प्रकार लिखा हैः *एक दूसरे के प्रति दयालु तथा सहृदय बनें। जिस तरह परमेश्वर ने समूह में आप लोगों को क्षमा कर दिया उसी तरह आप भी एक दूसरे को क्षमा करें।*

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है

– स्वामी दयानंद

संबंधों का तात्पर्य

एम. हेमावती

मनुष्य अपने जीवन में कई संबंधों को सच्चा या पक्का समझता है। वास्तव में वह सच्चा संबंध होता ही नहीं है। हम अपने जीवन में कुछ लोगों से इतने मिल-जुल जाते हैं कि उनके बिना जीवन को सोच भी नहीं सकते। मगर जब किसी कारणवश उनसे बिछड़ जाते हैं तब धीरे-धीरे उनके बिना रहने की आदत डाल लेते हैं और कुछ दिनों बाद उन्हें भूल भी जाएँ तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। सच्चा संबंध वही होता है जो अपने आपको सही से समझ लें। इस भूमंडल के हर एक जीव और निर्जीव वस्तु से संबंध रखना, उनमें पवित्रता देखना और बदले में कुछ भी आशा न रखना सच्चा संबंध होता है।

एक बार एक मुनि तालाब में गिरे हुए एक बिच्छू को बचाने का प्रयत्न कर रहे थे और हर बार बिच्छू उन्हें डंक मारता था। फिर भी मुनि हठपूर्वक उसे तालाब से निकालने की कोशिश कर रहे थे। इसे देखकर वहाँ जमे हुए लोगों ने मुनि से पूछा, आप उस डंक मार रहे बिच्छू को क्यों बचाना चाहते हैं? तब मुनि ने बताया- बिच्छू का धर्म है डंक मारना और मुनि धर्म है पीड़ितों की रक्षा करना। जब बिच्छू अपना धर्म छोड़ना नहीं चाहता है तो मैं क्यों अपना धर्म छोड़ू?

मनुष्य को चाहिए कि अपना धर्म निभाए और कर्म करता रहे। जैसे आग का धर्म है जलना, पानी का धर्म है ठंडक पहुँचाना वैसे ही मानव का धर्म है मानवता। जहाँ आशा है वहीं निराशा है। निराशा है तो दर्द है। बिना कुछ आशा के कर्म करते रहना श्रेष्ठ धर्म है। मानव और मानवता का जो संबंध है वहीं सच्चा संबंध है।

फलों से निखारें शारीरिक सुंदरता

-पद्मलता एम.एस.

प्रकृति के खट्टे-मीठे फलों एवं सब्जियों से भी आप अपने शरीर का सौंदर्य निखार सकते हैं। प्रस्तुत हैं कुछ आसान टिप्स-

1. टमाटर के रस में 3-4 बूँदें ग्लिसरीन मिलाकर लगाने से त्वचा चिकनी व सुंदर हो जाती है।
2. संतरे के रस में मुलतानी मिट्टी मिलाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा की खुश्की दूर होती है।
3. अनार के छिल्कों को सुखाकर बारीक पाउडर बनाकर गुलाब जल के साथ मिलाकर उबटन की तरह लगाने से शरीर के दाग चेहरे की झाईंयाँ भी नष्ट होती हैं।
4. गाजर के रस में बेसन मिलाकर चेहरे पर प्रतिदिन लगाने से झाईंयाँ-झुर्रियाँ दूर होती हैं।
5. खरबूजे के गूदे को त्वचा पर मलने से त्वचा का रंग साफ होता है तथा पसीने की दुर्गंध भी दूर होती है।
6. नींबू के छिलकों को दाँतों पर रगड़ने से दाँतों का मैलापन दूर होता है।
7. जामुन की गुठलियों का पाउडर पानी में मिलाकर सिर धोने से बाल मुलायम और काले होते हैं।
8. नित्य दो केले खाकर एक गिलास दूध पीने से चेहरे का रंग निखरता है व वजन में वृद्धि होती है।
9. पिसा आंवला उबटन की तरह मलने से त्वचा साफ और मुलायम रहती है तथा चर्म रोग नहीं होते।
10. गर्मियों में आम का सेवन नित्य करने से त्वचा का रंग साफ होता है, रूप निखरता है।

स्वास्थ्य एवं बस यात्रा

श्रीमती एम.एस.पद्मा

बेंगलूर में स्वास्थ्य रहना चाहो तो बस यात्रा करें। आप सोच रहे होंगे कि स्वास्थ्य और बस यात्रा का क्या संबंध है? बहुत गहरा संबंध है, चौकिए नहीं लेकिन बस, हमारे साथ बस यात्रा कीजिए और पाइए स्वास्थ्य।

बस यात्री का लक्ष्य हमेशा बस पर ही रहता है। नजर इधर-उधर नहीं भटकती है, उसकी एकाग्रता बढ़ती है। बेंगलूरू में बसें बस स्टॉप से आगे या पीछे रुकती है और बस यात्री बस में चढ़ने के लिए होड लगाकर लंबे कदम रखते हुए दौड़ते हैं। ऐसे शरीर की हल्की कसरत हो ही जाती है। फिर बस पर चढ़ते ही अपने सांस पर काबू पाने के लिए जोर-जोर से हाँफने लगते है, ऐसे अनायास प्राणायाम-भस्तृका कर लेते हैं। आप जानते ही है कि प्राणायाम से जिद्दी रोग भी दूर भाग जाता है। बेंगलूरू बस यात्री बस पकड़ने के चक्कर में बस की आवाज कान में पड़ते ही या उसका आभास होते ही ऐसे दौड़ने लगते हैं जैसे वे ओलंपिक खेल के प्रतिभागी हो। फिर बस मिल जाने पर खुशी से उनका चेहरा खिल उठता है तो चेहरे की मांसपेशियों का व्यायाम हो जाता है।

बेंगलूरू में अब रास्ते राजमार्ग से कम नहीं है। परंतु पदयात्री के लिए बनाए गए पटरी पर चलने के लिए कुशलता के साथ-साथ सभी राजगुण जैसे श्रद्धा, सावधानी, बुद्धिमत्ता, तीक्ष्णता, स्मरण शक्ति आदि चाहिए। वरना वह भी पटरी के साथ खो जाएगा। बस पकड़ने के जोश में बस यात्री पटरी पर कभी चढ़ते हुए, कभी उतरते हुए, कभी लाँघते हुए सावधानी से मगर तेजी से चलता है। आप ही सोचिए क्या उतरना, चढ़ना, लाघना शरीर के लिए कम व्यायाम है। वैसे ही श्रद्धा, सावधानी, एकाग्रता मानसिक योग है। पदयात्री को पटरी पर चलते हुए श्रद्धा न हो या वह असावधान हो तो फिसलना निश्चित है। और उसकी याददास्त कम हो तो कहाँ गढ़ढा है, कहाँ चढाई है पता ही नहीं चलेगा। तो आप मानते हैं न कि श्रद्धा, सावधानी, बुद्धिमता, स्मरण शक्ति और एकाग्रता की आवश्यकता है तो यह हुआ न मानसिक योग। कहावत है कि योग भगाए रोग।

बेंगलूर बस में चढ कर भी बस यात्री को सावधानी बरतनी है वरना ब्रेक के साथ यात्री भी ब्रेक हो जाता है। बस यात्री की जान होती है बस चालक के हाथ में अतः बस यात्री अपनी सफल यात्रा के लिए भगवान का नाम जाप किए बिना नहीं रह सकते हैं। ऐसे बस यात्री राम नाम का जाप करते हुए उसका फल भी प्राप्त कर लेते हैं। इतनी सुविधाएँ आपको और कहीं मिल सकती है क्या? बेंगलूरु बस में इतनी भीढ़ रहती है कि आपको अपने हाथ पाँव का भी ख्याल रखना पड़ता है और आपके शरीर, हाथ, पाँव पर इतना दबाव पड़ता है कि उनका शारीरिक दर्द छू मंतर हो जाता है।

बेंगलूरु बस यात्रा में तो ट्रैफिक जाम में फँसना अनिवार्य है। और जब फंस जाते हैं तो उसका मजा ही अलग है। जाम में फसें लोगों की बातें सुनने का और उनका मजा उठाने का मौका मिलता है। कभी-कभी इन्हीं बातों से कहानी की कथावस्तु मिल जाती है तो कभी-कभी शेरो-शायरी जन्म लेती है और कभी कुछ अच्छे काम की प्रेरणा मिलती है तो कभी-कभी बातों ही बातों में अच्छे मित्र भी मिल जाते हैं। बस यात्रा में ऐसी खुशहाली स्वास्थ्य पर सुप्रभाव डालेगी ही। अब आप जरूर मानेंगे कि बस यात्रा करों और स्वस्थ रहो।

- *हिंदी का मान राष्ट्र का सम्मान है।*
- *हिंदी हिमालय से कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।*
- *हिंदी देश के करोड़ो नर-नारियों के ह्रदय और मस्तिष्क को खुराक देने वाली भाषा है।*
- *हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें हमारे देश की सभी भाषाओं का समन्वय है।*
- *हिंदी को उचित स्थान दें और हिंदी का सम्मान बढ़ाएँ।*
- *आओ हम हिंदी सीखें और हिंदी में काम करें।*
- *हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है।*
- *देश का कोई भी सच्चा प्रेमी हिंदी का तिरस्कार नहीं कर सकता है।*
- *राष्ट्रभाषा के तीन तत्व सुख समृद्धि और अपनत्व।*
- *भाषा राष्ट्रीय एकता हासिल करने का एक जबरदस्त साधन है।*

स्वामी विवेकानंद

-सी.वी.भ्रमरा

स्वामी विवेकानंद एक सच्चे ऋषि थे। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कलकत्ता में विश्वनाथ दत्त और भुवनेश्वरी देवी के यहाँ प्रथम पुत्र के रूप में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनको अट्ठारह वर्ष में ही रामकृष्ण परमहंस पहचान गए थे। उन्होंने जान लिया था कि नरेंद्रनाथ कौन हैं। और किसलिए जन्मे हैं। नरेंद्रनाथ के विषय में रामकृष्ण परमहंस ने कहा कि नरेंद्र एक सहस्त्र दल कमल हैं। बाद में नरेंद्रनाथ स्वामी विवेकानंद के रूप में परिणत होकर रामकृष्ण के शिष्य के रूप में संसार में प्रसिद्ध हुए। उन्हेंने रामकृष्ण के विचारों को चिर स्मरणीय बना दिया। समस्त मानव जाति के लिए स्वामी विवेकानंद ने युग धर्म की स्थापना व प्रचार किया। बचपन से ही नरेंद्रनाथ में नटखटपनें की कोई सीमा नहीं थी। साथ ही शुरू से ही उनमें ध्यान, एकाग्रता एवं कर्तव्य परायणता दिखाई देती थी। दीन-दुखियों का कष्ट देखकर नरेंद्र के प्राण रो उठते थे। नरेंद्र एक ज्ञानी, गुणी, आत्मविश्वासी और युक्तिवादी युवक थे। जीवन में उन्होंने भगवान के सिवा और कुछ नहीं चाहा था। नरेंद्र के आते ही श्रीरामकृष्ण आनंदित हो जाते थे और उनकी ओर स्नेह से देखते रहते थे।

श्रीरामकृष्ण के जीनव आदर्शों से अनुप्राणित होकर नरेंद्रनाथ ने परम सत्य स्वरूप भगवान प्राप्ति को जीवन का एकमात्र उद्देश्य बनाया। उन्होंने कठोर ब्रह्मचर्य का व्रत ग्रहण किया। ईश्वर चिंतन में उनका बहुत सा समय बीत जाता था। सांसारिक दुखों और कष्टों ने नरेंद्रनाथ को विश्व प्रेमी विवेकानंद में रूपांतरित कर दिया। विवेकानंद ने जनसेवा में अपनी सारी शक्ति लगा दी। विवेकानंद ने कहा था कि दरिद्र नारायणों के माध्यम से परमात्मा हमारी सेवा को ग्रहण करना चाहते हैं। इस संदेश ने स्वार्थी मनुष्यों को असीम मुक्ति का मार्ग दिखाया। उन्होंने शिकागो की यात्रा की तथा अमरीकी समाचार पत्रों ने उन्हें सम्मेलन का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति घोषित किया और कहा कि उनका व्याख्यान सुनने के बाद आज हमें विशेष रूप से यह अनुभव हुआ कि भारत ने ऐसा ज्ञानवान धर्म प्रचारक भेजा है जिसने हिंदु धर्म को एक विश्वरण्य बना दिया। 4 जुलाई 1902 को स्वामी विवेकानंद महासमाधि द्वारा आत्मस्वरूप में लीन हो गए।

स्वामी विवेकानंद जी के उपदेश-

1. *यदि ईश्वर है तो हमें उसे देखना चाहिए, यदि आत्मा है तो हमें उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति कर लेनी चाहिए अन्यथा उन पर विश्वास न करना ही अच्छा है। ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है।*
2. *परोपकार ही धर्म है परिपीड़न ही पाप है। शक्ति और पौरुष पुण्य हैं, कमजोरी और कायरता पाप हैं। स्वतंत्रता पुण्य है पराधीनता पाप है। प्रेम करना पुण्य है घृणा करना पाप है। परमात्मा और अपने आप में विश्वास करना पुण्य है, संदेह करना पाप है।*
3. *स्वामी विवेकानंद जी का विश्वास था कि कपट से जगत में कोई महान कार्य नहीं हो सकता।*

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है

–जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया

–डॉ राजेंद्र प्रसाद

कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले द्विभाषी वाक्यांश।

1	जांच की और सही पाया।	CHECKED AND FOUND CORRECT.
2	अनुमोदित।	APPROVED
3	बिल पास कर दिए गए।	BILLS PASSED
4	मामला विचाराधीन है।	CASE IS UNDER CONSIDERATION
5	निर्णय की प्रतीक्षा है।	DECISION IS AWAITED
6	संक्षिप्त नोट नीचे रखा है ।	BRIEF NOTE IS PLACED BELOW
7	अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र की जाए ।	FOLLOW UP ACTION SHOULD BE TAKEN SOON
8	आगे की रिपोर्ट की प्रतीक्षा है ।	FURTHER REPORT IS AWAITED
9	तदनुसार सूचित करें ।	INFORM ACCORDINGLY
10	कृपया प्राप्ति की सूचना दें।	PLEASE ACKNOWLEDGE RECEIPT
11	स्थिति की समीक्षा की जा रही है ।	POSITION IS BEING REVIEWED
12	प्रस्ताव स्वीकार है ।	PROPOSAL ACCEPTED
13	उत्तर का मसौदा प्रस्तुत करें ।	PUT UP DRAFT REPLY
14	रिपोर्ट की प्रतीक्षा है ।	REPORT IS AWAITED
15	देख लिया, धन्यवाद ।	SEEN, THANKS.
16	अनुमोदन के लिए प्रस्तुत।	SUBMITTED FOR APPROVAL
17	अवलोकन के लिए प्रस्तुत।	SUBMITTED FOR PERUSAL
18	आदेश के लिए प्रस्तुत।	SUBMITTED FOR ORDERS
19	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।	ACTION MAY BE TAKEN AS PROPOSED
20	देखकर वापस किया जाता है ।	SEEN AND RETURNED
21	आदेश जारी किये जाएं ।	ORDERS MAY BE ISSUED
22	कृपया मंजूरी प्रदान करें ।	KINDLY ACCORD SANCTION
23	इसी के साथ संलग्न ।	HEREWITH ENCLOSED
24	कृपया उत्तर दें ।	KINDLY REPLY
25	अदायगी के लिए पारित किया गया ।	PASSED FOR PAYMENT
26	बकाया विवरण ।	ARREARS STATEMENT
27	यथा परिवर्तित ।	AS MODIFIED
28	मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।	DRAFT IS PUT UP FOR APPROVAL
29	परिचालित करके फाईलित करें ।	CIRCULATE AND FILE
30	चर्चा करें ।	PLEASE DISCUSS

जन-मन की अभिलाषा

उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी

हिंदी लिखिए हिंदी पढ़िए ये हिंदुस्तानी भाषा है
संवैधानिक दायित्व यही ये जन-मन की अभिलाषा है।

याद करो सेवा से पहले शपथ जो तुमने खाई थी
लगता है वह शपथ तुम्हारी केवल रश्म अदायी थी।

कौन यकीनन मानेगा इस तर्कहीन फरमान को
सत्तर साल में सिखा न पाए हिंदी हिंदुस्तान को।

जहां सत्तर प्रतिशत के द्वारा हिंदी बोली जाती है
उस देश के भोले बचपन में अंग्रेजी रोपी जाती है।

सात दशक तो बीत गए अब और रहा नहीं जाता
हिंदी द्वारा हिंदी का अपमान सहा नहीं जाता।

हिंदी को अधिकार चाहिए जिसकी वह अधिकारी है
जनमानस की अभिव्यक्ति है लाखों की महतारी है।

जनमानस की अभिव्यक्ति है लाखों की महतारी है।

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं

(संकलन)

-संदीप
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अपनी जान से ज्यादा, प्यारा लैपटॉप छोड़कर
अलमारी के ऊपर रखा, धूल खाता गिटार छोड़कर
जिम के सारे लोहे बट्टे और बाकी सारी मशीनें
मेज़ पर बेतरतीब पड़ी वर्कशीट, किताबें, कापियाँ
सारे यूं ही छोड़ जाते है, बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

जो तकिये के बिना कहीं भी सोने से कतराते थे
आकर कोई देखे तो वे कहीं भी सो जाते हैं
खाने में सौ नखरे वाले अब कुछ भी खा लेते हैं
अपने रूम में किसी को भी नहीं आने देने वाले
अब एक बिस्तर पर सबके साथ एडजस्ट हो जाते हैं

घर को मिस करते हैं लेकिन कहते हैं बिल्कुल ठीक हूं
सौ-सौ ख्वाहिशें रखने वाले अब कहते हैं कुछ नहीं चाहिए
पैसे कमाने की होड़ में, वो भी कागज बन जाते हैं
सिर्फ बेटियां ही नहीं साहब बेटे भी घर छोड़ जाते हैं ।

मोहल्ले की गलियां, जाने पहचाने रास्ते
जहां दौड़ा करते थे, अपनों के वास्ते
मां, बाप, यार, दोस्त, सब पीछे छूट जाते हैं
तनहाई में करके याद, लड़के भी आंसू बहाते हैं

नई नवेली दुल्हन, जान से प्यारे बहन-भाई
छोटे-छोटे बच्चे चाचा-चाची ताऊ-ताई
सब छुड़ा देती है साहब, ये रोटी और कमाई
मत पूछो इनका दर्द, वो कैसे छुपाते हैं
सिर्फ बेटियां ही नहीं साहब, बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

बोन्साई

-सुमा जी कुमार

हमारी बेटी सुरीली तीन साल की होने वाली है और हम उसको स्कूल में दाखिल करने के लिए सोच रहे हैं। वह अच्छा गाती है, दूसरों की नकल भी करती है, अपनी उम्र से ज्यादा होशियार है-स्मार्ट भी। इसी कारण से जो कोई हमारे यहां आता है तो मुझ से यह जरूर कहता है कि बच्ची को म्यूजिक सिखाओं, स्वीमिंग सिखाओं यह बहुत स्मार्ट है- जल्दी सीखेगी......वगैरह-वगैरह। मुझे भी लगने लगा चलो किसी न किसी क्लास में भेजना तो है। उसको इस कांम्पिटीटिव जमाने में रहना तो है न। यह सोच कर मैनें क्लासेस के बारे में जानकारी हासिल करना शुरू किया। तब मेरी सहेली चंपा का फोन आया। आज शाम को उसका प्रोग्राम टी.वी. में आने वाला था उसके बारे में बोल रही थी। शाम को सहेली का प्रोग्राम देखने लगी तो उसमें वो कह रही थी और साथ ही साथ डेमो भी दे रही थी कि कैसे हम घर में ही टेबल पर पौधों को सज़ा सकते हैं बोन्साई बनाकर।

मैं सामान्य से बाऊल में इतना बड़ा पौधा देखकर चकित हो गई । आश्चर्य की बात है कि इतने छोटे से बाऊल में इतना बड़ा पेड़ करने का तरीका बता रही थी। पौधों का नियमित रूप से ट्रिम करके ऐसा बना सकते हैं। वह कुछ और भी कह रही थी पर मेरा मन विचाराधीन रहा और कुछ और सोचने लगा। मैने मन ही मन तय किया कि मैं अपनी बेटी को बोन्साई नहीं बनाऊगीं । वह जो भी करेगी जैसे भी करेगी अपने बचपन को खूब एंज्वाय करेगी, मैं कोई दबाव नहीं डालूंगी।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए

–महावीर प्रसाद द्विवेदी

भारत में आपदा प्रबंधन

सुमित कुमार

आपदा तो स्थान विशेष या समय विशेष पर नहीं आती है परंतु हमारे देश अर्थात भारत जो लगभग 32,87,263 वर्ग कि.मी. में फैला है, उसके किसी-न-किसी हिस्से में बराबर ही आपदाओं की घटनाएं सुनने को मिलती रहती हैं। आपदा दो प्रकार की होती हैं- 1) प्राकृतिक आपदा 2) मानव जनित आपदा-

प्राकृतिक आपदा - वह आपदा जो प्रकृति द्वारा बिना किसी निर्धारित समय या सूचना के आती है और जिसके बारे में हमें पहले से कोई सूचना नहीं होती है, उसे प्राकृतिक आपदा कहते हैं। जैसे–भूकंप, बाढ़ आदि।

मानव जनित आपदा - वह आपदा जो मनुष्यों के कृत्यों के कारण आती है, अर्थात जिन आपदाओं में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मनुष्य का हाथ होता है, उसे मनुष्य जनित आपदा कहते हैं। जैसे- परमाणु विकिरण से होने वाली आपदाएं, रासायनिक हथियारों से होने वाली क्षति इत्यादि ।

जहां तक हमारे देश का प्रश्न है यहां दोनों प्रकार की ही आपदाएं बराबर आती रहती हैं। हम बात आरंभ करते हैं उस समय से जब हमारे देश के एक बड़े हिस्से बंगाल में 1914 में अकाल अर्थात दुर्भिक्ष हुआ था। इस प्राकृतिक आपदा के समय हमारे देश में अंग्रेजों का शासन था। उन्होंने हमारे देश की जनता को उनके हाल पर छोड़ दिया और अपने फायदे में लगे रहें जिसके कारण लाखों लोगों ने भूख और प्यास से अपनी जान गंवा दी । अंग्रेजों ने इस आपदा प्रबंधन के लिए कोई विशेष कदम नहीं उठाए । पुनः जब उन्हीं के काल में महामारी आई तो उनकी गलत नीतियों और कुव्यवस्थाओं के कारण न जाने हमारे कितने ही भाई-बहन काल के गाल में समा गए।

स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देश में आपदाओं से निबटने और आपदाओं का प्रभाव कम करने के क्षेत्र में काफी काम किया गया है। आपको याद होगा जब गुजरात में भीषण भूकंप आया था, हम सभी लोग देशभक्ति में डूबे जन-गण-मन गा रहे थे और वहाँ लोगों की जाने जा रही थीं। उस समय हमारे देश में एक भयंकर उत्साह देखने को मिला। सारा देश एक रंग में नजर आ रहा था और सभी लोगों ने बढ-चढ कर आपदा प्रबंधन में अपनी भागीदारी निभाई। बाढ़ भी हमारे देश में एक बहुत बड़ी समस्या है जिसके निदान के लिए हमारी सरकार प्रयासरत है एवं 'नदी जोड़ो परियोजना' चला रही है। आपदाओं को कम करने में हमारे देश के कई सपूतों ने अपना भरपूर योगदान दिया है। मैं प्रथम नाम डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन का लेना चाहूगां जिनके कारण हमारे देश में हरित-क्रांति आई और आज हम आत्मनिर्भरता के साथ-साथ विदेशों में भी अनाज निर्यात कर रहे हैं। ऐसे अनेक सपूत हैं जिनके बारे में लिखते-लिखते शायद शब्द भी कम पड़ जाएगा। हमें एकजुट होकर हर एक आपदा से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। *"बाकी होइहै वही जो राम रचि राखा"*।

जय हिंद, जय भारत।

वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है

–पीर मुहम्मद मूनिस

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है

– रविशंकर शुक्ल

पूर्णविराम का चमत्कार

श्रीमती एस सुभद्रा

एक पतिपरायण पत्नी अपने पत्नीपरायण पति को पत्र लिखती है। डाक निकलने का समय होता जा रहा था। वह जल्दी से अनुमान के आधार पर पूर्णविराम लगा देती है। उसके पत्नीपरायण पति सर पर पाँव रखकर दौड़े चले आते हैं। मुझ से मत पूछिए क्यों उसने पूर्णविराम जिस प्रकार लगाए, उससे वाक्य और उनका अर्थ किस प्रकार बदल गया, आप खुद देख लीजिए।

प्रिय प्राणनाथ,

क्या चक्कर है आपने चिट्ठी नहीं लिखी मेरी प्यारी सहेली ने। नौकर के साथ शादी कर ली है, हमारी गाय ने। बछड़े को जन्म दिया है हमारे दादा जी। रोज जमकर शराब पीते हैं हमारे बच्चे। तुम्हें बहुत याद करते हैं पर तुम मिलने नहीं आए कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया है एक साड़ी और सोने का हार छुट्टी आते वक्त लेते आना एक खूब सूरत और सुशील औरत। मेरी सहेली बन गई है मड़ोना और स्पाईस गर्लस। आज कल टी. वी. पर अच्छे गाने गाती हैं हमारी धन्नो और बसंती बकरियां बिक गई हैं तुम्हारी मां जी। तुम्हें बहुत याद करती है तुम्हारी प्यारी बहन। परीक्षा के दिनों में बीमार हो गई है हमारी कुतिया। पागल हो गई है हमारी जमीन। गेहूँ दे रही है ताऊ जी के सिर पर। सफेद बाल आ गया है हमारे, पाँव पर। चोट लगी है तुम्हारी चिट्ठी को। तरसती हूं। दवाईयां लेते रहना। चरणों की दासी।

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है

– मौलाना हसरत मोहानी

हिंदी दिवस समारोह 2020 में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण।

कावेरी पत्रिका के 24वें अंक के विमोचन की झलकियाँ।

हिंदी दिवस समारोह 2019 की झलकियाँ।

महालेखाकार (ले.व.ह.) कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) KARNATAKA,BENGALURU
हिंदी दिवस समारोह
(13 सितंबर 2019)

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ।

हिंदी दिवस 2019 के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते कार्यालय के पदाधिकारी।